B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

HISTORY HONS.

BA DEGREE-2

Sub./Gen

UNIT-4

Department of History

Pankaj kr.Mishra

Date-06/07/2020

TOPIC— सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का स्वरूप

PART-2

Scanned with CamScanner

सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन

स्वरूप

⊙ इस आंदोलन का स्वरूप बहुआयामी था। यह सामाजिक एवं धार्मिक दोनों सुधारों से संबद्ध था। इस आंदोलन का मुख्य लक्ष्य समाज सुधार था चूँकि समाज में अनेक कुरीतियों का समर्थन धर्म के आधार पर किया जाता था अर्थात् सामाजिक जीवन बहुत सीमाओं तक धार्मिक विचारों व मान्यताओं से प्रभावित था। अतः धर्म में सुधारों के बगैर समाज सुधार तर्कहीन था।

⊙ आंदोलन का स्वरूप मूलतः सुधारवादी था, क्रांतिकारी नहीं। सुधारकों ने धार्मिक बुराइयों को दूर करने के लिए धार्मिक आडंबरों पर चोट की न कि उस धर्म को अस्वीकार करने की।

⊙ इसका स्वरूप पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से युक्त नहीं था। इसे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है।

⊙ आंदोलन अपने सामाजिक आधार के संदर्भ में मध्यवर्गीय था।

⊙ सुधारों का स्वरूप प्रजातांत्रिक था। इसमें व्यक्ति के अधिकारों एवं उनकी स्वतंत्रता, समानता पर बल दिया गया। आंदोलन में सामाजिक न्याय पर बल दिया गया जो प्रजातांत्रिक स्वरूप की ओर संकेतित करता है।

⊙ यह आंदोलन तकनीकी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबद्ध था।

⊙ धर्म से संबद्ध होते हुए भी आंदोलन का स्वरूप धर्मनिरपेक्ष था। यद्यपि कुछेक आंदोलनों में धार्मिक संकीर्णता के तत्व देखे जा सकते हैं।

⊙ यह आंदोलन कुछ सीमाओं तक राजनीतिक पहलुओं से भी संबद्ध रहा। राजा राममोहन राय के संदर्भ में इसे समझा जा सकता है।

⊙ यह आंदोलन मध्ययुगीन सुधार आंदोलन से भिन्न था क्योंकि 19वीं सदी के सुधारकों ने सुधार के क्रम में विधि व कानून निर्माण पर भी बल दिया।

Scanned with CamScanner

◉ सुधार आंदोलन शैक्षणिक सुधार का अंग लिए हुए था। लगभग सभी सुधार आंदोलनों में शिक्षा के विकास पर बल दिया। नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया।

Pankaj
06/04/2020

——— ××× ——— ××× ———

Scanned with CamScanner